❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 43, अंक 46 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 12 अक्तूबर, 2020 से रविवार 18 अक्तूबर, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

मशाल द्वारा कोरोना योद्धाओं के सम्मान में आयोजित समारोह सम्पन्न

कोरोना काल के दौरान सफाई कर्मियों की अमूल्य सेवाओं को भुलाया नहीं जा सकता -पद्मभूषण महाशय धर्मपाल

सफाई कर्मियों के सम्मान में आर्य समाज का विशेष योगदान - सजय गहलोत, चेयरमैन

कर्मयोगी महाशय जी का प्रेरणादायक जीवन मानव मात्र के लिए अनुकरणीय - विनय आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित एवं संचालित आर्यसमाज मलकागंज, दिल्ली-110007 में आयोजित हुआ सम्मान समारोह

11 अक्तूबर, 2020। कोरोना संक्रमण काल में सेवारत 60 सफाई कर्मचारियों को "मशाल" की ओर से आर्य समाज मन्दिर, मल्कागंज, दिल्ली में स्मृति चिन्ह, उपहार एवं प्रशस्ति पत्र देकर पद्मभूषण महाशय धर्मपाल, प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य ने समारोहपूर्वक सम्मानित किया। इस अवसर पर महाशय जी ने अपना सन्देश को भावभरे शब्दों में लिखकर कहा - जिस प्रकार "मां" अपने बच्चों को साफ सुथरा रखती है, उसी भांति सफाई विभाग के अधिकारियों, युवा कर्मियों ने महामारी के दौरान जो सेवाएं दी हैं, उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। कुछ समर्पित कोरोना वायरस योद्धा मानवता की राह में परमात्मा को प्यारे हो गए, अपने अतुलनीय त्याग के लिए, वे अमर रहेंगे। उनके परिवारों की सुरक्षा का दायित्व समाज व राष्ट्र का है। आप में उपस्थित सभी सफाई कर्मियों को और उनके परिवारों को बहुत-बहुत आशीर्वाद और शुभकामनाएं देता हूं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य ने कहा - महाशय धर्मपाल जी का कर्मयोगी जीवन मानवता की धरोहर है। जिन्होंने कड़ी मेहनत, साधना से तांगा चलाया, चक्की चलाई और पिताजी के साथ दुकानदारी करने के कार्यों में कोई संकोच नहीं किया। 97 वर्ष की अवस्था में आज भी वे योग, साधना, प्राणायाम, डम्बल व्यायाम, नियमित सुबह-शाम सैर करने के साथ 'सादा जीवन-उच्च विचार' के सिद्धान्तों पर चल रहे हैं।

उनकी हार्दिक इच्छा है कि आर्थिक, सामाजिक रूप से पिछड़े हमारे सफाई कर्मचारियों के बच्चों को आई.ए.एस, आई.पी.एस, आई.एफ.एस की उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया जाये। इसी निमित महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान का गठन किया गया है, जहां मेधावी छात्र-छात्राओं को मौखिक, लिखित परीक्षा तथा साक्षात्कार के माध्यम से देश के महत्वपूर्ण पदों पर चयनित करने में सहयोग किया जा रहा है। भविष्य में कमजोर वर्ग के बच्चों को स्कूल, कॉलेज स्तर में सर्वोच्च अंक पाने पर शिक्षा, रहन-सहन, छात्रावृति देकर भी प्रतिभा-प्रोत्साहन की नई योजना भी शीघ्र क्रियान्वित होगी।

इस अवसर पर दिल्ली सफाई आयोग के चेयरमैन संजय गहलोत ने कहा - आर्य समाज ने युद्धस्तर पर कार्य कर रहे सफाई कर्मियों को पुरस्कृत करने का जो रचनात्मक अभियान चलाया है, निश्चित ही उससे समाज को नई दिशा मिलेगी।

श्री गहलोत ने कहा - महाशय जी वास्तव में हमारे मसीहा हैं, जो स्वयं तो धार्मिक शिक्षाओं पर चलते हैं, साथ ही सभी वर्गों के कल्याण के लिए समर्पित हैं, उनके वेदानुकूल कार्यों, आचरण से हमें आज साक्षात महापुरुष के दर्शन हुए हैं, उनका आशीर्वाद मिला। ऐसे महामानव की शताधिक आयु हो ऐसी हमारी मंगल कामना है। ऐसे युगपुरुष का 100वां जन्मोत्सव हम गौरवपूर्ण ऐतिहासिक कार्यक्रम ताल कटोरा इन्डोर स्टेडियम में अपने समाज की ओर से मनायेंगे। इस अवसर पर उन्होंने महाशय जी को महर्षि वाल्मीकि का वृहद चित्र तथा शाल ओढ़ाकर उनका हार्दिक अभिनन्दन किया।

आचार्य शिवा शास्त्री ने अपने उद्बोधन में कहा - देश को आजाद कराने में क्रांतिवीरों ने बहुत कष्ट उठाये, उन्होंने क्रान्तिकारी राजगुरु की मार्मिक घटना सुनाकर सबको रोमांचित कर दिया। जन चेतना चिंगारी से आज "मशाल" आन्दोलन उभरते युवाओं से तेजस्वी रूप धारण कर रहा है, और यह क्रांति की मशाल हमें देश के घर-घर में जलानी है ताकि हमारी युवा पीढ़ी विदेशी षड्यन्त्रों के मायाजाल व नशे से मुक्त हो। वहीं सभा के युवा भजनोपदेशक कुलदीप आर्य ने देशभक्ति के गीतों से महान वीर सुभाष चन्द्र बोस की यशगाथाएं सुनाई।

आर्य समाज मल्कागंज के धर्माचार्य यशदेव विद्यालंकार के कहा कि - महर्षि मनु की वर्ण व्यवस्था गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित है। समाज सुधारक महर्षि दयानंद सरस्वती ने सर्वप्रथम दलितोद्धार का अभियान चलाया और उनके मानस पुत्र स्वामी श्रद्धानंद जी ने सम्पूर्ण जीवन दलितोद्धार में लगा दिया व अपने प्राणों का बलिदान दिया। महर्षि दयानंद जी के अनेकों अनुयायियों ने दलित उद्धार के लिए विशेष कार्य किये। - *शेष पृष्ठ 7 पर*

सम्मान समारोह का दीप प्रज्वलन से शुभारम्भ करते पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, आर्यसमाज मलका गंज के प्रधान श्री सुभाष कोहली, सफाई कर्मचारी आयोग के चेयरमैन श्री संजय गहलौत। सफाई कर्मचारी आयोग की ओर से महाशय धर्मपाल जी को महर्षि वाल्मीकि का चित्र भेंट किया गया। इस अवसर पर कार्यकर्ताओं और कोराना यौद्धाओं को सम्बोधित करते श्री संजय गहलौत जी। (नीचे) सफाई कर्मचारी के रूप में सेवा करने वाले कोरोना योद्धाओं को सम्मानित करने महाशय धर्मपाल जी।

वेद-स्वाध्याय

वैश्वानर देव!

स इत्तन्तुं स वि जानात्योतुं स वक्त्वान्यृतुथा वदाति।
य ईं चिकेतदमृतस्य गोपा अवश्चरन्परो अन्येन पश्यन्।। - *ऋ० 6/9/3*
ऋषिः **भरद्वाजो बार्हस्पत्यः।।** देवता - **वैश्वानरः।।** छन्दः **प्रस्तारपङ्क्तिः।।**

शब्दार्थ - सः = वह वैश्वानर अग्नि **इत्** = ही **तन्तुम्** = ताना तनने को और **सः** = वही **ओतुम्** = बाना भरने को **विजानाति** = जानता है, **सः** = वह **ऋतुथा** = समय-समय पर **वक्त्वानि** = वक्तव्य ज्ञानों को भी **वदाति** = बोलता है, प्रकाशित करता है। **यः** = जो [वैश्वानर अग्नि] **अमृतस्य गोपाः** = अमरत्व का रक्षक हो **अवः** = इधर नीचे **चरन्** = चलता हुआ और **परः** = ऊपर-ऊपर **अन्येन** = अपने दूसरे रूप से **पश्यन्** = देखता हुआ **ईम्** = इस संसार को **चिकेतत्** = जान रहा है, इसमें ज्ञान-चैतन्य दे रहा है।

विनय - मैं नहीं जानता कि जो संसाररूपी वस्त्र बुना जा रहा है उसका ताना क्या है, बाना क्या है और जब कभी बुनते हुए इसका कोई तन्तु टूट जाता है तो उसे जोड़नेवाला कौन है। हाँ, वह वैश्वानर अग्नि अवश्य जानता है। वह ही इस संसाररूपी वस्त्र के लिए ताना तनना और बाना भरना जानता है। वह अग्नि ऋक् [ज्ञान] के ताने में यजुः (कर्म) का बाना डालता हुआ इस महायज्ञ के वस्त्र को निरन्तर बुन रहा है और यही समय-समय पर किसी ज्ञानतन्तु के विच्छिन्न होने पर नया ज्ञान देने द्वारा, वक्तव्य के बोलने द्वारा, उसे जोड़ता रहता है।

यह वैश्वानर अग्नि कौन है? यह वह अग्नि है जो इस विश्व-शरीर का अग्नि है, जो असंख्य व्यष्टि (वैयक्तिक) अग्नियों को समष्टि (सामूहिक) अग्नि से एक करनेवाला है, अतएव जो व्यक्तियों के मरते रहने पर भी अमर रहनेवाला है, जो अमरत्व का रक्षक 'अमृतस्य गोपा' है। यह अग्नि इस सब संसार को ज्ञान, चैतन्य, स्फूर्ति दे रहा है। यह अपने व्यष्टिरूप से जहाँ नीचे पृथिवी पर पैर बनकर विचर रहा है, वहाँ यह अपने समष्टिरूप से ऊपर द्युलोक में नेत्र होकर सबको देख रहा है। भाइयो ! क्या तुमने 'वैश्वानर अग्नि' को पहचाना? यह वह अग्नि है जिसमें या जिसके द्वारा यह संसाररूपी महान् यज्ञ हो रहा है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

हाथरस वाली दलित क्रान्ति दिल्ली में क्यों है मौन?

दिल्ली का आदर्श नगर इलाका एक पतली सी गली में मीडिया का भारी जमावड़ा। राहुल राजपूत की हत्या पर चीख-चीखकर न्याय मांगते टीवी चैनल के एंकर, सवाल भी पूछे जा रहे थे कि अब कथित सेकुलर लिबरल लोग खामोश क्यों हैं? लेकिन एक जो सवाल विशेष था उसे कोई एंकर भी नहीं पूछ रहा था कि राहुल राजपूत नहीं बल्कि अनुसूचित जाति का युवा था और अब एक दलित की हत्या पर हाथरस वाला पूरा गैंग कहाँ है? दूसरा सवाल ये कि अगर शांतिदूत हिन्दू लड़की को अपने जाल में फंसाए तो कोई बात नहीं, वहीं अगर हिन्दू लड़का प्रेम करके मुस्लिम लड़की से शादी करें तो इस्लाम में हराम। सवाल ये भी है दलित और दलित में अंतर क्या है, यदि किसी अनुसूचित जाति के व्यक्ति की हत्या मुस्लिम करते हैं तो वह जायज है और अगर किसी भी कारण से अगर अन्य हिन्दू पर ये काम हो जाये तो आप जानते हैं।

राहुल से शुरू करें तो 18 साल का राहुल ओपन स्कूल से बीए की पढ़ाई कर रहा था। वो अपने घर में ही बच्चों को ट्यूशन पढ़ाता था। क्लास लेने भी जाता था। 7 अक्तूबर की शाम सात बजे पांच मुसलमान युवकों ने उसे घेर लिया, उसे बुरी तरह मारा पीटा। गंभीर रूप से घायल राहुल की अस्पताल में मृत्यु हो गई। राहुल की गलती सिर्फ इतनी थी कि घर से करीब एक किलोमीटर दूर जहांगीरपुरी की झुग्गी में रहने वाली एक मुसलमान लड़की से उसकी दोस्ती थी।

यानि दोस्ती थी, इतना काम जब किया। अगर प्रेम या विवाह हो जाता तो अंकित सक्सेना की तरह सीधा गले पर वार करते? लेकिन इसके बाद की इस सलेक्टिव राजनीति को समझिये, हाथरस से ही लीजिये। एक दलित की हत्या पर पूरा राजनितिक अमला टेंट-तम्बू लेकर हाथरस रवाना हो गया था। किस-किस के नाम गिनाये राजनितिक दलों में ऐसा उत्साह कभी-कभी देखने को मिलता है, रोहित वेमुला की आत्महत्या पर देखा, गुजरात के ऊना में देखा जब कुछ कथित गौरक्षकों ने हमला किया था। इसके बाद हरियाणा के सुनपेड़ में देखा जब राहुल गाँधी से लेकर सभी राजनितिक दलों ने वहां पहुंचकर उनकी जाति की चीर फाड़ की थी।

चंद्रशेखर रावण अब गायब है उसे आदर्श नगर का राहुल दिखाई नहीं दे रहा है? सात अक्तूबर से आज कई दिन बीत गये कितनी पार्टी के नेता दलित हितेषी नेता जय भीम वाले कहाँ गये? राहुल गाँधी के घर से आदर्शनगर कितनी दूर है? क्यों अगर रोहित की हत्या में मुसलमानों के बजाय कोई अन्य वर्ग होता तो क्या होता अब तक तो संविधान और लोकतंत्र खतरे में आ गया होता। चूँकि राहुल दलित था उसे राजपूत बना दिया सोशल मीडिया पर इस बार हैस-टेग वामपंथियों द्वारा दिया गया और पूरा राईटविंग सोशल मीडिया उनके बहाव में बह गया।

सिर्फ इतना ही नहीं साल 2017 देश में एक अलग सलेक्टिव गैंग सक्रिय हुआ था फिल्म अभिनेत्री शबाना आजमी ने भी उसमें ताल ठोकी थी और मुंबई में 'नॉट इन माइ नेम' के नाम से प्रदर्शन शुरू हुआ। देखते ही देखते यह प्रदर्शन दिल्ली, कोलकाता, हैदराबाद, तिरुवंतपुरम, बैंगलुरू, इलाहाबाद, पुणे सहित अन्य शहरों में भी आयोजित हुआ। सबके हाथ में बैनर-पोस्टर थे जिनपर लिखा था 'नॉट इन माइ नेम' इन बढ़ती हुई हत्यायों और उसके पीछे की सांप्रदायिक विचारधारा का हम सरासर विरोध करते हैं। ये विरोध प्रदर्शन जुनैद, पहलु खां, तरबेज की हत्या के विरोध में था।

आज राहुल की हत्या पर नॉट इन माई नेम गायब है, सिर्फ राजनीति ही सलेक्टिव नहीं है बल्कि मॉब लिंचिंग भी सलेक्टिव है। ऐसा पहली बार नहीं हो रहा है, जब राहुल की मॉब लिंचिंग पर सेकुलर गैंग ने चुप्पी साध रखी है। दिल्ली में डॉ नारंग, रिया गौतम, ध्रुव त्यागी और अंकित की हत्या हुई। मगर ये सभी मॉब लिंचिंग की घटनाएं गुमनामी की भेंट चढ़ गईं। सवाल ये है कि ये लोग हिन्दुओं के मारे जाने पर चुप्पी क्यों साध लेते हैं? विडंबना है कि अगर हिन्दू मॉब लिंचिंग का शिकार होता है तो उस घटना को मॉब लिंचिंग की श्रेणी में नहीं रखा जाता है।

मॉब लिंचिंग का मुद्दा हमेशा तब उठता है जब मुसलमान किसी आपराधिक मामले में भीड़ का निशाना बनता है। इसके अलावा लव जिहाद में मुसलमान लड़के, हिन्दू लड़कियों को प्रेम जाल में फंसा कर शादी कर लेते हैं। मगर कोई हिन्दू अगर

......मॉब लिंचिंग का मुद्दा हमेशा तब उठता है जब कोई मुसलमान किसी आपराधिक मामले में भीड़ का निशाना बनता है। इसके अलावा लव जिहाद में मुसलमान लड़के, हिन्दू लड़कियों को प्रेम जाल में फंसा कर शादी कर लेते हैं। मगर कोई हिन्दू अगर मुसलमान लड़की से शादी करता है तो मुसलमानों को यह बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं। इसी का उदाहरण है उत्तरप्रदेश के जनपद महराजगंज की घटना। अजहरुद्दीन नाम का युवक इस बात से आग बबूला था कि उसकी बहन से हिन्दू युवक ने विवाह कर लिया था। शादी के सात वर्ष बीत गए थे। इस दौरान दो संतानें भी हुईं। बड़ी बेटी तीन साल की है और छोटा बेटा डेढ़ साल का है। अभियुक्त अजहरूद्दीन को दो मासूम बच्चों का भी ख्याल नहीं आया। उसके मन में बस यह था कि कैसे हिन्दू युवक ने उसकी बहन से शादी की। अजहरूद्दीन ने धोखे से अपने बहनोई की कुल्हाड़ी से काटकर हत्या कर दी।.......

मुसलमान लड़की से शादी करता है तो मुसलमानों को यह बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं। इसी का उदाहरण है उत्तरप्रदेश के जनपद महराजगंज की घटना। अजहरुद्दीन नाम का युवक इस बात से आग बबूला था कि उसकी बहन से हिन्दू युवक ने विवाह कर लिया था। शादी के सात वर्ष बीत गए थे। इस दौरान दो संतानें भी हुईं। बड़ी बेटी तीन साल की है और छोटा बेटा डेढ़ साल का है। अभियुक्त अजहरूद्दीन को दो मासूम बच्चों का भी ख्याल नहीं आया। उसके मन में बस यह था कि कैसे हिन्दू युवक ने उसकी बहन से शादी की। अजहरूद्दीन ने धोखे से अपने बहनोई की कुल्हाड़ी से काट कर हत्या कर दी।

घटना को अंजाम देने के बाद अभियुक्त अजहरूद्दीन अपने बहनोई की मोटर साइकिल से थाने पर पहुंचा और आत्मसमर्पण कर दिया। उसने पुलिस से कहा कि सात सालों से बदले की आग में जल रहा था। अब जाकर तसल्ली मिली है। इस घटना के बाद आस-पास के इलाके की आक्रोशित जनता, अभियुक्त का घर जलाने पर आमादा थी मगर पुलिस ने समझा-बुझा कर सभी को वापस भेज दिया।

एक दूसरी घटना उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जनपद के मुबारकपुर थाना क्षेत्र के निवासी राजीव गौतम की है। आटो चलाकर जीविकोपार्जन करता था। राजीव ने आयशा खातून से शादी की थी। कुछ विवाद के बाद दोनों पति-पत्नी अलग-अलग मोहल्लों में रहने लगे थे। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। राजीव गौतम अपनी रिश्तेदारी में गाजीपुर गया था। 22 अक्टूबर को वह लौटने के लिए ट्रेन में बैठा। सादात रेलवे स्टेशन पर करीब एक दर्जन मुस्लिम युवक ट्रेन में सवार हुए और राजीव गौतम को बेरहमी से पीटने लगे। इन युवकों ने राजीव गौतम को अधमरा कर दिया और उसके बाद चलती हुई ट्रेन से फेंक दिया।

यानि साफ हो गया है दलित पार्टियों और नेताओं को दलितों की चिंता नहीं है। हिन्दुओं के मारे जाने पर ये लोग चुप्पी साधे रहते हैं। हिन्दुओं की हत्याओं पर खास किस्म के संगठन कोई आंदोलन नहीं करते हैं। पहलू खान के लिए न्याय मांगने वाली मीडिया भी खामोश रहती है। हिन्दुओं की मॉब लिंचिंग पर सन्नाटा और मुसलमानों की हत्या पर धरना-प्रदर्शन, यह दोहरा मानदंड आखिर कब तक चलेगा?

- सम्पादक

अजरबेजान और आर्मीनिया युद्ध या क्रूश युद्ध

अजरबेजान में करीब 97 फीसदी से अधिक मुस्लिम हैं और आर्मीनिया में 94 फीसदी ईसाई हैं, और दोनों के बीच नागोर्नो–काराबाख इलाके को लेकर लगातार भीषण लड़ाई चल रही है। आम नागरिकों की बस्ती पर गोले बरस रहे हैं, दोनों तरफ के अखबारों की सुर्खिया कुछ यूँ हैं कि दुश्मन के एयर डिफेंस सिस्टम तबाह, इतने टैंक और विमान मार गिराए, बड़ी संख्या में सैनिक मारे गये। प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति ने कहा कि एक एक इंच जमीन के टुकडे के लिए आखिरी साँस तक लड़ेंगे। सभी देश शांति चाहने वाली ओपचारिक टोन में बयान कर रहे हैं।

.........अगर देखा जाये तो आज का या पिछले 100 साल का झगड़ा नहीं है क्योंकि अगर अतीत में झाँककर देखा जाये तो युद्ध का इतिहास काफी पुराना है और इतना पुराना है कि हमें हजार साल पीछे ले जायेगा। जब ये देश अस्तित्व में भी नहीं थे। दरअसल अभी भी बहुत से लोगों को लिए नार्मल सा रूटीन युद्ध है लेकिन इस युद्ध के पीछे एक कहानी है एक किस्सा है। दरअसल सातवीं सदी में शुरू हुई इस्लामिक जिहाद ने ईसाई समुदाय और यहूदी समुदाय के पवित्र स्थल छीन लिए थे। उन्हें दुबारा हासिल करने के लिए इनके बीच करीब सात बड़े युद्ध हो चुके है। इन्हें सलीबी युद्ध, ईसाई धर्मयुद्ध, क्रूसेड अथवा क्रूश युद्ध कहा जाता है। इतिहासकार ऐसे सात क्रूश यानि सूली युद्ध मानते हैं। ......

आर्मेनिया और अजरबेजान 1918 और 1921 के बीच आजाद हुए थे। आजादी के समय भी दोनों देशों में सीमा विवाद के चलते कोई खास दोस्ती नहीं थी। पहले विश्व युद्ध के खत्म होने के बाद इन दोनों देशों में से एक तीसरा हिस्सा अलग हो गया। जिसे अभी जार्जिया के रूप में जाना जाता है। 1922 में ये तीनों देश सोवियत संघ में शामिल हो गए। यानि रूस का हिस्सा बन गये इस दौरान रूस के नेता जोसेफ स्टालिन ने अजरबेजान के एक हिस्से नागोर्नो–काराबाख को आर्मेनिया को दे दिया। लेकिन इसके पीछे भी एक किस्सा है बताया जाता है कि इस इलाके की अधिकतर आबादी आर्मीनियाई है। दशकों तक इस इलाके के लोगों ने कई बार ये इलाका आर्मीनिया को सौंपने की अपील की। लेकिन असल विवाद 1980 के दशक में शुरू हुआ, जब सोवियत संघ का विघटन शुरू हुआ और नागोर्नो–काराबाख की संसद ने आधिकारिक तौर पर खुद को आर्मीनिया का हिस्सा बनाने के लिए वोट किया।

दक्षिणपूर्वी यूरोप में पड़ने वाली कॉकेशस के इलाके की पहाड़ियां रणनीतिक तौर पर बेहद अहम मानी जाती हैं। सदियों से इलाके की मुसलमान और ईसाई ताकतें इन पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहती रही हैं। 1980 के दशक से अंत से 1990 के दशक तक चले युद्ध के दौरान 30 हजार से अधिक लोगों को मार डाल गया और 10 लाख से अधिक लोग विस्थापित हुए थे। अब 1994 में तो मामला शांत हो गया लेकिन अजरबेजान ने इस ख्वाहिश को दम तोड़ने नहीं दिया कि एक दिन दोबारा काराबाख पर कब्जा करेंगे। 2016 में हुई हिंसा में 110 लोग मारे गए थे। इसी साल जुलाई में 16 लोग मारे गए थे।

अब यहां आती है तुर्की और उसके राष्ट्रपति अर्दोगन की भूमिका। अर्दोगन जो पिछले कई सालों से दुनिया के हर झगड़े में टांग अड़ाते हैं, उन्होंने इन दोनों देशों की दुश्मनी भी सुलगा दी। अर्दोगन ने अजरबेजान का समर्थन कर दिया और कह दिया कि हर तरह अजरबेजान की मदद करेंगे। जुलाई में युद्ध की चाहत वाले प्रदर्शनों के पीछे भी तुर्की का ही समर्थन माना गया। खुले तौर पर तुर्की मुस्लिम बहुल अजरबेजान के साथ है और आर्मीनिया भी अकेला नहीं है। आर्मीनिया के साथ रूस है। तो असल में अजरबेजान और आर्मीनिया वाले झगड़े में तुर्की और रूस का झगड़ा है लेकिन दोनों पीछे से कठपुतली नचा रहे हैं।

अगर देखा जाये तो आज का या पिछले 100 साल का झगड़ा नहीं है क्योंकि अगर अतीत में झाँककर देखा जाये तो युद्ध का इतिहास काफी पुराना है और इतना पुराना है कि हमें हजार साल पीछे ले जायेगा। जब ये देश अस्तित्व में भी नहीं थे। दरअसल अभी भी बहुत से लोगों को लिए नार्मल सा रूटीन युद्ध है लेकिन इस युद्ध के पीछे एक कहानी है एक किस्सा है। दरअसल सातवीं सदी में शुरू हुई इस्लामिक जिहाद ने ईसाई समुदाय और यहूदी समुदाय के पवित्र स्थल छीन लिए थे। उन्हें दुबारा हासिल करने के लिए इनके बीच करीब सात बड़े युद्ध हो चुके है। इन्हें सलीबी युद्ध, ईसाई धर्मयुद्ध, क्रूसेड अथवा क्रूश युद्ध कहा जाता है। इतिहासकार ऐसे सात क्रूश यानि सूली युद्ध मानते हैं। वैसे इसकी शुरुआत सन 1095 के आसपास शुरू हुई थी। इसका बड़ा ही सरल वर्णन हॉलीवुड की मूवी सेसन ऑफ दा विच में काफी दिया गया है कि कैसे वेटिकन के पॉप ईश्वर के नाम पर और अरब के मुल्ला अल्लाह के नाम पर साम्राज्य स्थापित कर रहे थे।

एक समय यह क्षेत्र रोम के साम्राज्य का अंग था जिसके शासक चौथी सदी में ईसाई बन गये थे। लेकिन सातवीं सदी में इस्लामवादियों द्वारा भयंकर मारकाट इसके बाद पैगंबर के उत्तराधिकारी खलिफाओं ने अपने आसपास की संस्कृति के मत नष्ट किये। फिर दूर के देशों पर अपना शासन स्थापित कर लिया। लेकिन 11वीं सदी में यह स्थिति बदल गई। हाथ में क्रूश लेकर पॉप की सेना और पैगम्बर की सेना का सीधा टकराव हुआ पहला क्रुसेड युद्ध तीन साल चला। 1096 से 1099 तक हाथ में क्रूस लेकर 1099 में येरूसलम पहुँची ईसाई सेना ने विजय प्राप्त की।

दूसरा क्रुसेड युद्ध लगभग 48 साल बाद हुआ सन् 1144 में मोसल के तुर्क शासक इमादउद्दीन जंगी ने एदेसा को ईसाई शासक से छीन लिया। इसके लिए पोप से सहायता की प्रार्थना की गई और पॉप के आदेश से प्रसिद्ध संन्यासी संत बर्नार्ड ने इस धर्मयुद्ध का प्रचार किया। 1147 से 1149 तक चले युद्ध का किस्सा थोडा लम्बा है लेकिन यह युद्ध नितांत असफल रहा।

लेकिन इस युद्ध का कारण तुर्की शक्तिशाली बनकर उभरा सुलतान सलाउद्दीन के नेतृत्व में उनका बड़ा साम्राज्य बन गया जिसमें उत्तरी अफ्रीका में मिस्र, पश्चिमी एशिया में फिलिस्तीन, सीरिया, अरब, ईरान तथा इराक पर कब्जा कर लिया। उसने 1187 में शेरूसलम के ईसाई राजा को हत्तिन के युद्ध में परास्त कर बंदी बना लिया और येरूसलम पर अधिकार कर लिया। इसके बाद तीसरा क्रुसेड युद्ध आरम्भ हुआ जो 1188 से 1192 तक चला हार–जीत होती रही और अंत में संधि हुई।

चौथा क्रुसेड युद्ध भी पोप इन्नोसेंत तृतीय की अगुवाई में शुरू जो 1202 से चलकर 1204 तक चला। लेकिन इसके बाद एक खतरनाक युद्ध भी हुआ जिसमें सिर्फ बच्चे थे असल सन् 1212 में फ्रांस के स्तेफाँ नाम के एक किसान ने घोषणा की कि उसे ईश्वर ने मुसलमानों को परास्त करने के लिए भेजा है और यह पराजय बच्चों द्वारा होगी। इस प्रकार बच्चों के धर्मयुद्ध का प्रचार हुआ, 30,000 बच्चें और बच्चियां अधिकांश 12 वर्ष से कम अवस्था के थे, इस काम के लिए सात जहाजों में फ्रांस के दक्षिणी बंदरगाह मारसई से चले। दो जहाज तो समुद्र में समस्त यात्रियों समेत डूब गए, शेष के यात्री सिकंदरिया में दास बनाकर बेच दिए गए। इसी वर्ष एक दूसरे ग्रुप ने 20,000 बच्चों का दूसरा दल जर्मनी में खड़ा किया और वह उन्हें जनाआ तक ले गया, इनमें से बहुत से बच्चे पहाड़ों की यात्रा में मर गए।

– राजीव चौधरी

प्रेरक प्रसंग — वे हंसी में भी कभी झूठ नहीं बोलते थे

पण्डित श्री चमूपतिजी की धर्मपत्नी ने अपनी एक सखी व घरवालों से कह दिया कि अमुक दिन पण्डित चमूपतिजी मुझे लेने आएँगे, मेरा शरीर छूट जाएगा। वे ठीक–ठाक थीं। कोई रोग नहीं था, परन्तु मृत्यु के स्वागत के लिए वे तैयार होकर बैठ गई।

वह दिन आ गया। दस बजे, ग्यारह बजे और बारह बज गये। सबने कहा कि क्यों मौत की सोचती हो? आपको कुछ नहीं होता आप ठीक–ठाक हैं। आप नहीं मरेंगी, परन्तु पण्डित चमूपतिजी की पत्नी की एक ही रट थी कि मुझे स्वप्न में पण्डितजी ने कहा है कि तैयार रहना, मैं अमुक दिन तुम्हें लेने आऊँगा। पण्डितजी तो कभी भी हँसी–विनोद में भी झूठ नहीं बोलते थे, अत: उनकी बात टल नहीं सकती।

और ऐसा ही हुआ। सायंकाल तक पण्डितजी की धर्मपत्नी की मृत्यु हो गई।

मैंने स्वामी सर्वानन्दजी महाराज से इस घटना के सैद्धान्तिक विवेचन के लिए कहा तो आपने कहा कि पण्डितजी लेने आएँगे या वे लेने आये इसका कोई दार्शनिक आधार नहीं है। सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान् परमेश्वर किसी की सहायता नहीं लेता। स्वप्न को इस रूप में लेना ठीक नहीं है। इस घटना का कारण मनोवैज्ञानिक है। पण्डितजी की पत्नी के मन में यह पक्का विश्वास था कि उनके पति सदा सत्य ही बोलते हैं। इसी विश्वास के कारण वह मर गई। हम प्राय: देखते हैं कि कई बार डाक्टरों, वैद्यों के मुख से अपनी मौत की सम्भावना की बात कान में पड़ते ही रोगी मर जाते हैं।

यह तो हुआ इस घटना का सिद्धान्तपक्ष, परन्तु इस घटना का दूसरा पक्ष यह है कि उस महापुरुष का जीवन कितना निर्मल था कि उनकी पत्नी डंके की चोट से कहती हैं कि वे तो कभी हँसी में भी झूठ नहीं बोलते थे। उनकी सत्यवादिता की ऐसी गहरी छाप! *– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु*

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

अब 24 घंटे चल रहा है आपका अपना चैनल

www.AryaSandeshTV.com

Arya Sandesh TV

आर्य सन्देश टीवी पर वैदिक धर्म का प्रचार की बढ़ती लोकप्रियता

.....आर्यसन्देश टीवी पर 24 घंटे वैदिक धर्म वा वेद से जुड़े कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। भजन, व्याख्यान, सन्ध्या, हवन आदि सभी कुछ इसमें पूरा दिन भर दिखाये जाते हैं। कार्यक्रमों की गुणवत्ता इतनी उत्तम है, जिसका हम अनुमान भी नहीं करते थे। पाठक इस टीवी को देखेंगे तो हमारी इस अनुभूति की पुष्टि करेंगे।...

आज का युग प्रचार का युग है। हमारे सिद्धान्त व विचारधारा भले ही सर्वोत्तम व मनुष्य की उन्नति में अद्वितीय व अपूर्व क्यों न हो, यदि इसका व्यापक रूप से प्रचार नहीं किया जायेगा तो इसके अनुयायियों की संख्या कम ही रहेगी। यह हम सबका अनुभव है। हम देखते हैं संसार में अनेकानेक अविद्यायुक्त मत- मतान्तर प्रचलित हैं। वे संगठित रूप से अपनी मान्यताओं का प्रचार करते हैं। अविद्यायुक्त लोग उनसे आसानी से जुड़ आते हैं। उनमें यह भावना भी भर दी जाती है कि दूसरे मत वालों की अच्छी बातों को सुनना व विचार नहीं करना है। मत-मतान्तरों की इसी मनोवृत्ति के कारण वेद प्रचार आशातीत सफलता को प्राप्त नहीं हो सका। आजकल प्रचार के अन्य साधनों में एक साधन टीवी द्वारा प्रचार भी है। सभी मतों के अपने अपने चैनल हैं या वह किसी चैनल को शुल्क देकर किसी निर्धारित समय पर अपने मत का प्रचार कराते हैं। उनके अनुयायियों की संख्या निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होती हुई देखी जाती है। उनके कार्यक्रमों में युवा, स्त्री, पुरुष, वृद्ध व बच्चे सभी श्रेणियों के श्रोता आते हैं। उनको जो परोसा जाता है उसे वह स्वीकार कर लेते हैं। कारण यह है कि उनके ज्ञान नेत्र विद्या से युक्त व वैसे विकसित नहीं हैं जैसे सत्यार्थप्रकाश सहित वैदिक विद्वानों के सत्य विद्याओं के ग्रन्थों को पढ़कर मनुष्य की बुद्धि का विकास व उन्नति होती है। हम अनेक दशकों से आर्यसमाज का अपना टीवी चौनल हो, इसका स्वप्न लेते रहे हैं। अभी तक यह स्वप्न ही बना हुआ था। दो तीन दिन पूर्व हमें आर्य विद्वान श्री इन्द्रजित् देव, यमुनानगर का फोन आया। उन्होंने इस 'आर्यसन्देश टीवी' चौनल जो यूट्यूब द्वारा प्रसारित है, इसके विषय में हमें विस्तार बताया। इस चैनल पर प्रसारित कार्यक्रमों की हमें जानकारी भी दी। हमें इस चैनल को देखने की प्रेरणा की और प्रचारार्थ इस पर कुछ पंक्तियां लिखने का सन्देश व परामर्श दिया। उसी का परिणाम था कि हमने यूट्यूब पर आर्यसन्देश टीवी चैनल को सर्च किया और उसके अनेक कार्यक्रमों को देखा।

आर्यसन्देश टीवी पर 24 घंटे वैदिक धर्म वा वेद से जुड़े कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। भजन, व्याख्यान, सन्ध्या, हवन आदि सभी कुछ इसमें पूरा दिन भर दिखाये जाते हैं। कार्यक्रमों की गुणवत्ता इतनी उत्तम है, जिसका हम अनुमान भी नहीं करते थे। पाठक इस टीवी को देखेंगे तो हमारी इस अनुभूति की पुष्टि करेंगे। यह सभी कार्यक्रम महाशय धर्मपाल जी, एमडीएच व उनके सहयोग से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व अन्य ऋषि भक्तों के प्रयत्नों से प्रसारित हो रहे हैं। इसके लिये हम आयोजक वर्ग के सभी बन्धुओं को बधाई देते हैं। हमने पिछले दो तीन दिनों में यथासुविधा इस चैलन के अनेक कार्यक्रमों को देखा है। हमें सभी कार्यक्रम रुचिकर एवं उत्तम कोटि के लगे हैं। इन कार्यक्रमों को टीवी के साथ मोबाइल में यूट्यूब में आर्यसन्देश टीवी को सर्च कर देखा जा सकता है। टीवी का पर्दा बड़ा होता है। अतः उसमें कार्यक्रम देखने पर इसका सुख कहीं अधिक होता है। हमारे पास जियो टीवी कनेक्शन है। इसमें यूट्यूब व इसके सभी कार्यक्रम उपलब्ध हैं। अतः इसी साधन से हम इन काय्रक्रमों को देखते हैं। आजकल दिन में 3.00 बजे डा. प्रीति विमर्शिनी जी की शतपथ ब्राह्मण की यज्ञों पर कथा का एक घण्टा प्रतिदिन प्रसारण हो रहा है। प्रातः व सायं आचार्य सत्यजित् आर्य जी, रोजड की सत्यार्थप्रकाश पर व्याख्या भी चल रही है। रात्रि 9.00 से 10.00 बजे तक इस कार्यक्रम का प्रसारण होता है। इस समय हमें समय की सुविधा होती है है तब हम इसे ध्यान से देखते हैं। यह दोनों कार्यक्रम बहुत ही लाभदायक हैं। दिन में भजन, हवन आदि अनेक कार्यक्रम भी हम अपनी सुविधानुसार देखते हैं। हम अपने सभी पाठक मित्रों से अनुरोध करते हैं कि वह इस चौनल को यथासम्भव अपनी सुविधानुसार अवश्य देखें।

हम आशा करते हैं कि जैसे जैसे लोगों को इस आर्यसन्देश टीवी की जानकारी मिलती जायेगी, लोग इसे अवश्य देखेंगे। एक बार देख लेने के बाद स्वयं ही संस्कार बन जाता है और फिर उसे देखने की इच्छा होती है। हम इस आर्यसन्देश टीवी के प्रस्तुतकर्ताओं का धन्यवाद करते हैं और उन्हें बधाई देते हैं। उन्होंने इस कार्यक्रम को इतना सुन्दर, नयनाभिराम एवं रोचक बनाया है, जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। ईश्वर करे कि वेद, ईश्वर व आत्मा विषयक सद्ज्ञान सहित आर्यसमाज की विचारधारा के प्रचार व प्रसार में यह टीवी चैनल प्रभूत ख्याति व प्रसिद्धि प्राप्त करे और इससे वैदिक धर्म व आर्यसमाज के प्रचार के सभी लक्ष्य प्राप्त हों।

- मनमोहन कुमार आर्य

बाल बोध

समय का सदुपयोग

बच्चो, आर्य संदेश के इस अंक में हम समय के सदुपयोग पर बात करेंगे। समय बहुत मूल्यवान संपदा है। समय सबके लिए समान है। कुछ विद्यार्थी समय का सदुपयोग करते हैं, कुछ नहीं करते और कुछ दुरुपयोग करते हैं। समय एक गति है, एक बहाव है, जो अनवरत बहता है। इस अमूल्य समय की धारा को पहचानकर कुछ विद्यार्थी सफलता के उच्च शिखर पर पहुंचकर अपना, अपने माता-पिता का और अपने राष्ट्र का नाम ऊंचा करते हैं। दूसरी तरफ कुछ ऐसे भी होते हैं जो समय की कीमत को नहीं पहचानते और असफल होने पर अपने दुर्भाग्य को कोसते ही रह जाते हैं। लेकिन समय फिर लौटकर नहीं आता, इसलिए समय की गति को पहचानकर अपने जीवन को सफल बनाओ। - सम्पादक

विद्यार्थी जीवन में खेलने-कूदने का, हास-परिहास का, मनोरंजन और प्रसन्न रहने का पढ़ाई के साथ बहुत गहरा संबंध है। पर समय सारिणी बहुत ज़रूरी है। दुनिया में जिसने भी सफलता का परचम लहराया है, उनकी यह खास बात रही कि उन्होंने अपने समय का सदुपयोग किया। क्योंकि इसी समय के प्रवाह में विद्यार्थी प्रोफेसर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर या वह जो कुछ भी बनना चाहे, बन सकता है। इसके विपरीत वह समय बरबाद करके स्वयं बरबाद भी हो सकता है, उसके लिए पतन के रास्ते भी सदैव खुले रहते हैं। इसलिए अपने अनमोल समय को उत्तम कार्यो के लिए विभाजित करके अपनी प्रतिभा का समुचित विकास करें।

खेल (क्रीड़ा) एक ऐसा विषय है-जिसमें विद्यार्थी का ध्यान एक स्थान पर टिक जाता है। फिर उसे अन्य कुछ याद नहीं रहता, वह पूरी तरह खेल में मग्न हो जाता है। खेलने पर शरीर से पसीना निकलता है, रक्त संचार होता है और शरीर स्वस्थ रहता है। शारीरिक विकास के लिए उपयोगी है। लेकिन इतना ज़्यादा खेलना भी उचित नहीं कि शरीर थक जाए और जब आप स्वाध्याय करने या कोई अन्य कार्य करने लगें तो शरीर में दर्द होने के कारण आपका ध्यान बार-बार खेल पर ही जाए। यूं तो विद्यार्थी को मधुर व्यायाम करना चाहिए। थोड़े उपयोगी योगासन, दौड़, सर्वांग सुन्दर व्यायाम आदि लेकिन समय का ध्यान रखकर ऐसा करना चाहिए। ऐसे नहीं करना चाहिए कि खेलने पर आए तो बस पूरा दिन खेलते ही रहे।

हंसना सकारात्मक प्रक्रिया है। हंसने से मस्तिष्क विकसित होता है। विद्यार्थी को दिन में चार बार निःसंकोच होकर हंसना चाहिए लेकिन यह ध्यान रहे कि तुम्हारे हंसने से किसी को दुःख न पहुंचे। किसी को चिढ़ाना नहीं, व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग मत करना और अच्छी बातों पर हंसना अच्छी बात होती है। अगर कोई आपका हितैशी आपको डांट दे, तो आप उस समय उसको हंसी में टाल दो, कभी अकेले में उस पर विचार तो कर लेना पर मन में गांठ मत बांधना। अपने स्वभाव को सौम्य, शिष्ट और हंसमुख बनाकर रखना उज्ज्वल भविष्य का संकेत है। हंसने के लिए कुछ अच्छे चुटकुले हो सकते हैं, कोई अंताक्षरी, प्रतियोगिता कर सकते हैं, हंसने के कई और बहाने हो सकते हैं। लेकिन हंसी मज़ाक में इतना मत रम जाना कि दुनिया तुम पर ही हंसने लगे।

टी.वी., मोबाईल आदि मनोरंजन के लिए जितना उपयोगी हैं, उससे कहीं ज़्यादा खतरनाक भी सिद्ध हो सकते हैं। आजकल कोरोना काल में तो आनलाईन क्लास चलने के कारण मोबाईल का उपयोग जरूरी सा हो गया है, इसके साथ साथ घर पर रहने के कारण टी वी देखना भी ज्यादा सुलभ हो गया है। किंतु टी.वी. और मोबाइल का सही उपयोग किया जाए तो अच्छी बात है वरना इनके दुष्प्रभाव से बचना बड़ा कठिन है। ये दोनों उपकरण मनोरंजन के साथ-साथ विद्यार्थी को अनेक तत्वों का बोध भी कराती हैं। सामान्य ज्ञान के लिए भी यह अच्छा साधन है, लेकिन ज़्यादा प्रयोग करने से भी विद्यार्थी की हानि भी होती है। शारीरिक हानि-आंखें कमजोर हो जाती हैं, मानसिक-मन पढ़ाई में नहीं लगता और स्मरण शक्ति कमजोर हो जाती है। कुछ विद्यार्थी लगातार टी. वी. पर नजर गड़ाए रखते हैं, अपना कीमती समय वे नष्ट कर देते हैं।

जो उन्हें याद रखना चाहिए उसे स्मरण नहीं करते, टी.वी. के कार्यक्रम दिमाग में नोट कर लेते हैं। दरअसल एक्टर, डायरेक्टर और प्रोडयूसर से कभी आप मिलेंगे तो ज्ञात होगा कि यह सब ड्रामा मात्र है। एक कहानी के ऊपर एक्टर एक्टिंग करता है, डायलाग बोलता है और उसमें अनेक लोगों का परिश्रम होता है। लेकिन एक्टर फिल्म या नाटक की आत्मा की तरह होता है। कुछ भी हो, सारे कार्य एक्टर को महान दर्शाने के लिए होते हैं। इसलिए अच्छे दृश्यों को देखने का प्रयास करो।

टी.वी. देखना अच्छी बात है, लेकिन सीमाएं (मर्यादा) समय का ध्यान रखकर और अच्छे, उपयोगी प्रोग्राम देखें तो विशेष लाभ होता है। टी.वी. से हम शिक्षा ले सकते हैं, पर विद्यार्थी की एक समय सीमा होती है। सीमा में रहकर हर कार्य करना उचित है। कवि ने भी प्रसंग के अनुरुप अच्छा कहा-

- शेष पृष्ठ 7 पर

मैं आर्यसमाजी कैसे बना

मैं पौराणिक था और मेरी मां भी पौराणिक थी। मैं अविभाजित हिन्दुस्तान में पैदा हुआ था। हम 19-11-1947 को आगरा, नाई की मंडी, चौक सदरमही में आ गए थे। छठवीं कक्षा में मैंने डी.ए.वी. इण्टर मीडिएट कालेज, मोती कटरा में प्रवेश लिया। वहां पर प्रत्येक कक्षा को बारी-बारी से यज्ञ करना होता था। प्रातः काल एक पीरियड वेद पाठ का भी होता था, जिसमें सत्यार्थ प्रकाश और महर्षि दयानन्द प्रणीत ग्रंथ पढ़ाए जाते थे। उस वक्त डी.ए.वी. इण्टर मीडिएट कालेज के प्रधानाचार्य श्री एम.एल.गुप्ता थे और प्रबंधक श्री जैसाराम आर्य जी थे। उन दिनों इस डी.ए.वी. इण्टरमीडिएट कालेज का बड़ा नाम था। मैं भी वहां यज्ञ करना सीख गया और संध्या भी करना सीख गया। मैंने उस इण्टरमीडिएट कालेज से सन् 1958 में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की और 20 जुलाई 1960 को मैं सरकारी सेवा में LDC के रूप में आ गया। इसके बाद सभी परीक्षाएं मैंने निजी तौर पर अपने परिश्रम से उत्तीर्ण की। मैंने 12 फरवरी 1971 को अनुवाद के रूप में केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल में ज्वाइन किया। वहां मेरी सहायक निदेशक के रूप में अक्तूबर 1976 में पदोन्नति हुई। मैंने 1973 में हिमाचल प्रदेश विश्व विद्यालय से एम.ए. (हिन्दी) में किया। 9 सितम्बर 1967 को मेरा विवाह श्रीमती प्रेमलता चुघ से हुआ। संयोगवश मेरे ससुर श्री नारायण दास चुघ राजेन्द्र नगर आर्य समाज के कोषाध्यक्ष रहे हैं। इधर मेरे चाचाश्री हंसराज मदान और श्री नारायण दास चुघ दोनों आर्मी से थे और दोनों ही रिटायर हुए। एक दिन मेरे ससुर श्री नारायण दास चुघ ने अपनी छोटी सुपुत्री की टीचर की नियुक्ति के लिए एम.सी.डी. दिल्ली में आना था। उसमें मेरे मित्र श्री बासदेव त्यागी जी को बुलाया हुआ था और मैं भी आया था। मेरे मित्र श्री बासदेव त्यागी सिगरेट काफी पीते हैं। मेरे ससुर मुझे देखते रहे कि मैं सिगरेट पीता हूँ या नहीं। पर मेरे उपर संस्कार आर्यसमाजी थे इसलिए मैंने सिगरेट को स्पर्श भी नहीं किया। इस बीच मैं 1968 से 1973 तक राजेन्द्र नगर में किराए के मकान में रहा। इसके बाद जुलाई 1973 में जनकपुरी आ गया। यहां पर किराए पर रहकर अपना मकान बनवाया और उसमें नवम्बर 74 में अपने मकान में रहने लगे। यहां मैंने अक्तूबर 73 से प्रत्येक रविवार को घर पर यज्ञ करने का संकल्प लिया और अपनी आय का शतांश आर्यसमाज पंखा रोड, सी.-3, जनकपुरी को देने लगा। जैसे-जैसे मेरी आय बढ़ती गई, वैसे-वैसे मैं भी अपनी सदस्यता को शतांश तक ले गया। अभी मैं 800/- का मासिक सदस्य हूँ। अपने सेवा काल के दौरान इस समाज में विभिन्न पदों पर कार्य किया। श्री धर्मपाल जी और श्री विनय आर्य के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यभार सम्भालने से पूर्व केवल इस समाज से प्रतिनिधि के रूप में दो ही सदस्य नामित किए जाते थे। जिसमें एक मै था और दूसरे सदस्य वैद्य महेन्द्रपाल सिंह जी आर्य थे। जब मैं 1997 में प्रधान बना तो मैंने कहा कि अब हमारी आर्य समाज की जो यथार्थ स्थिति है उसी को सूचना भेजनी जाएगी। कुछ भी छिपाया नहीं जाएगा। अब हम 1997 से इस समाज से दशांश (पूरा) भेज रहे हैं। जब मैं 31-3-2002 को निदेशक के पद से सेवामुक्त हुआ तब से प्रतिदिन यज्ञ कर रहा हूं। प्रतिदिन दोनों समय संध्या करता हूँ और अतिथि यज्ञ के लिए 5100/- हर वर्ष परोपकारिणी सभा अजमेर को दान देता हूँ। अब मैं 10 प्रतिशत अपनी पेंशन का आर्य समाज की संस्थाओं को दान देता हूँ। बलिवैश्व देव यज्ञ के लिए दो गौशालाओं को 200-200 प्रतिमाह दान देता हूँ। 5-6 बार मैं रोजड़ के शिविर में शामिल हुआ हूँ। अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के लिए मैंने 6 लाख 30 हजार रुपए इक्टठे करके दिए हैं। मैं और मेरी धर्मपत्नी ने अपना-अपना देह दान Army College of Medical Science Delhi Cantt को देने का संकल्प लिया है। मैं अपनी सम्पत्ति से मेरी और मेरी धर्मपत्नी की मृत्यु के बाद 20 प्रतिशत दान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दान देने का संकल्प लिया है, जिसके ब्याज से गुरुकुलों की सहायता की जाएगी। जब से मैं प्रधान बना तब से मैं लगभग 15 गुरुकुलों को वर्ष में 150000/- की सहायता करते हैं। मेरी तीन सुपुत्रियाँ हैं जो सभी आर्य समाजी विचारों की है। मेरी बड़ी सुपुत्री सारिका हर रविवार को यज्ञ करती है और दूसरी सुपुत्री जो Army College of Medical Science में Professor हैं और उनका पति B.L. कपूर में ICU का Incharge है। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती प्रेमलता मदान जी को हमारी समाज की एक सदस्या श्रीमती उषा बंसल जी ने प्रेरणा दी कि मेरी धर्मपत्नी एक बार रोजड़ होकर आए और जो-जो शंकाए हैं उसका निवारण करे। वह भी रोजड़ होकर के आई और उन्होंने शंकाओं का निवारण किया। अब वह विभिन्न आर्यसमाजों में प्रवचन देती हैं और दिन-रात महर्षि प्रणीत ग्रंथों को ही पढ़ती हैं। मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य केन्द्रीय सभा को हर माह 500/-500/- की छोटी-सी सहायता देता हूँ।

शिव कुमार मदान
पूर्व प्रधान सी-ब्लाक (14 वर्ष)
उप प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
सी-2/172, जनकपुरी, नई दिल्ली-58

स्वास्थ्य रक्षा — पपीता मात्र फल नहीं, औषधि भी है

प्राचीनकाल से ही हमारे देश में भोजन के साथ फल खाने की परम्परा रही है। आहार में फलों का बहुत महत्त्व है। यह स्वास्थ्य तथा आरोग्य की दृष्टि से श्रेष्ठ है। आधुनिक विशेषज्ञों ने भी फल के सेवन से शरीर को निरोग, स्वस्थ तथा बलशाली बना सकने की अनेकों घोषणाएं की हैं। किसी भी बीमारी और बीमारी से उठने के बाद रोगियों को फल खाने की सलाह डाक्टर देते हैं।

पपीते का कई प्रकार से प्रयोग किया जाता है। फल तथा औषधि के रूप में तो इसका इस्तेमाल किया ही जाता है। कच्चे पपीते की सब्जी भी बनाई जाती है। दौड़ती-भागती जिदंगी में हमें आहार में फलों को पूरा महत्त्व देना चाहिए। ताकि शरीर को संतुलित पोषक तत्त्व मिल सकें। विश्व की सबसे प्राचीन व वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद विशेषज्ञों के अनुसार कच्चा पपीता मल रोधक, कफ और वात यानी वायु को कुपित करने वाला होता है, जबकि पका हुआ पपीता रस में मधुर, पित्त नाशक, एवं स्वादिष्ट गुणों से युक्त होता है।

क्षेत्रफल की दृष्टि से पपीता हमारे देश का पांचवा लोकप्रिय फल है। बिहार, असम, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान में इसकी बागवानी की जाती है। फल वृक्षों में पपीता ही एक ऐसा पौधा है जो लगाने के एक साल बाद फल देने लगता है। व्यापारिक स्तर पर इसकी बागवानी के अलावा हरेक व्यक्ति इसे अपने आंगन, गौशाला के बाड़े, सिंचाई कुओं के आसवास लगाकर स्वादिष्ट फल प्राप्त कर सकता है। पपीते में एस्कारविक अम्ल एवं विटामिन डी प्रचुर मात्रा में होते हैं।

शरीर के लिए अत्यंत आवश्यक विटामिन डी इसमें आवश्यकतानुसार आसानी से प्राप्त हो जाते हैं। पपीते की एक फांक आपको पूरे दिन के लिए विटामिन डी की आवश्यकता को पूरी कर सकती है। अनुसंधानकर्ताओं ने पपीते में निम्न तत्त्वों का विश्लेषण किया है- जल-89.6 प्रतिशत, कार्बोहाइड्रेट-9.5 प्रतिशत, प्रोटीन-0.5 प्रतिशत, खनिज-0.4 प्रतिशत, बसा-0.1 प्रतिशत तथा एक सौ ग्राम पपीते में 56 कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है। इस प्रकार शर्करा, टाटरिक एसिड, साईकिप्सेलिक एसिड तथा विटामिन ए, बी, सी तथा डी का अच्छा स्रोत है। इस फल में कई तरह के पाचक रस भी पाए जाते हैं, जिनमें विशेष रूप से पेप्सिनजो प्रोटीन पचाने में सक्षम हैं, उल्लेखनीय हैं। 100 ग्राम पपीते में 70 से 100 मि.ग्रा. तक विटामिन सी रहता है। विटामिन सी की शरीर को विशेष रूप से आवश्यकता रहती है क्योंकि यह अनेक रोगों से शरीर की रक्षा करता है।

- शेष अगले अंक में

आर्यसमाज कोटा ने किया कोरोना योद्धा डॉ. विजय सरदाना का सम्मान

कोरोना के संक्रमण से एक और पूरा विश्व भयभीत है, वहीं दूसरी ओर कोरोना वॉरियर्स डॉक्टर एवं चिकित्सा कर्मी पूरी निष्ठा से मरीजों को बचाने के लिए कार्य कर रहे हैं। ऐसे ही कोरोना योद्धाओं में से एक है मेडिकल कॉलेज कोटा के प्राचार्य डॉ. विजय सरदाना। जो कोरोना से ग्रस्त मरीजों की सेवा करते हुए स्वयं संक्रमित हुए किंतु बिना विचलित हुए कोरोना को हराकर पुनः स्वस्थ होकर आज भी व्यथित एवं पीड़ित मानवता की सेवा उसी निष्ठा व लगन से कर रहे हैं।

उक्त विचार आर्य समाज के प्रांतीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा ने कोटा के कोरोना योद्धा डॉक्टर विजय सरदाना के सम्मान करते हुए व्यक्त किए।

इससे पूर्व आर्य समाज के एक शिष्टमंडल ने अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में जिसमें आर्य समाज महावीर नगर के मंत्री राधावल्लभ राठौड़, आर्य समाज गायत्री विहार के मंत्री उमेश कुर्मी, आर्य समाज तलवंडी के सदस्य किशन आर्य, हरियाणा वरिष्ठ युवा समाजसेवी सागर पिपलानी व डॉक्टर वरुण ठक्कर ने नयापुरा सिविल लाइन स्थित डॉक्टर विजय सरदाना के निवास पर पहुंच शिष्टाचार भेंट करी और कोटा में कोरोना रोगियों की सेवा कार्य करने के लिए उन्हें सम्मानित किया।

इस अवसर पर आर्य समाज की ओर से केसरिया साफा, गायत्री मंत्र से सुसज्जित केसरिया पटका तथा मोतियों की माला पहनाकर एवं महर्षि दयानंद सरस्वती रचित

सत्यार्थ प्रकाश की प्रति भेंट की गई।

इस अवसर पर डॉ. सरदाना ने आर्य समाज का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज के लोग निस्वार्थ भाव से सेवा कार्य करते हैं। महर्षि दयानंद सरस्वती के विचार से प्रभावित होकर सादा जीवन और उच्च विचार के आदर्शों पर चलते हुए सेवा व परोपकार के कार्य कर रहे हैं जो सराहनीय हैं। - ***प्रचार मन्त्री***

सामाजिक कार्यकर्त्ता कैसे बनें?

– डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो पूरा समय किसी संगठन का नहीं पाते परन्तु उनकी रुचि ऐसे कार्यों में रहती है जो जनता की सेवा से सम्बन्धित हों वे इन कार्यों से संगठन से जुड़े रह सकते हैं। वे अपने विचारों की अभिव्यक्ति इण्टरनेट, मीडिया, समाचार पत्र और व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा करें। आजकल प्रचार का यह सशक्त माध्यम है। परन्तु यह व्यक्तिगत प्रचार न होकर संस्था की नीतियों के समर्थन में होना चाहिये।

गतांक से आगे –

सामाजिक कार्य करने वाली संस्थाओं से कैसे जुड़ें?

1. आजकल भारत में हजारों सामाजिक संस्थायें विभिन्न सेवा कार्यों में संलग्न हैं। इनका परिचय इण्डरनेट से प्राप्त किया जा सकता है। आपकी जिन कार्यों में रूचि है उसी संस्था से सम्बन्धित होकर कार्य प्रारम्भ करें। परन्तु पहले उसकी गतिविधियों की जानकारी अवश्य ही प्राप्त कर लें। कई बार ऊँची दुकान और फीके पकवान वाली बात उन पर चरितार्थ होती है। अन्य लोगों की प्रतिक्रिया को जानकर ही आगे कदम बढ़ायें।

2. यदि आपके पास ऐसी कोई नवीन योजना है तो आप उसका पूरा विवरण प्रस्तुत करें। हो सकता है कि वे लोग आपसे सहमत हो जायें तो आपको कार्य करने में अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ेगा। यदि आपकी योजना से कोई सहमत नहीं होता तो फिर आपको अपने ऊपर विश्वास रखते हुए स्वयं ही अलग संस्था का निर्माण कर आगे बढ़ना होगा।

3. जिस कार्य को आप करना चाहते हैं वैसे विचार वाली संस्था का साहित्य, नियमावली और उनकी बौद्धिक कक्षाओं में अवश्य ही सम्मिलित होंवे। इस विषय से सम्बन्धित साहित्य भी पढ़ना चाहिये। यदि विषय को जानने वाला कोई अनुभवी व्यक्ति है तो उससे भी परामर्श करना उपयोगी रहेगा।

4. संस्था को महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों से निकटता बनायें। अपने कार्य से उन्हें प्रभावित करें। परन्तु यह स्मरण रखें कि चापलूसी करने वाले व्यक्ति को सब जान जाते हैं और उसकी उपेक्षा करने लगते हैं। आप न बोलें परन्तु आपका काम बोलना चाहिये। ऐसे पुरुषार्थी और समर्पित कार्यकर्त्ता को अधिकारी पहचान लेते हैं और उसे छोड़ना नहीं चाहते।

5. प्रयत्न करें कि आपके किसी संस्था या संगठन में सक्रिय होने से उसके कार्यक्षेत्र की वृद्धि होवे तथा कुछ नवीन ज्ञान, कार्य योजना और कार्य करने की पद्धति का विकास हो। इस कार्य में बाधायें भी आ सकती हैं क्योंकि जो पुराने कार्यकर्त्ता हैं वे नहीं चाहेंगे कि अमुक व्यक्ति हम से आगे जाये। वे आपको हतोत्साहित भी करेंगे तथा व्यवधान भी डालेंगे। आपका उपहास भी करेंगे परन्तु आपको हिम्मत नहीं हारनी है। अपनी लगन और अदम्य साहस के कारण एक दिन अपने आपको पहली पंक्ति में खड़ा पायेंगे।

आंशिक कार्यकर्त्ता

कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो पूरा समय किसी संगठन का नहीं पाते परन्तु उनकी रूचि ऐसे कार्यों में रहती है जो जनता की सेवा से सम्बन्धित हों वे इन कार्यों से संगठन से जुड़े रह सकते हैं।

1. अपने विचारों की अभिव्यक्ति इण्टरनेट, मीडिया, समाचार पत्र और व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा करें। आजकल प्रचार का यह सशक्त माध्यम है। परन्तु यह व्यक्तिगत प्रचार न होकर संस्था की नीतियों के समर्थन में होना चाहिये।

2. अपनी आय का एक निश्चित भाग सामाजिक संस्थाओं को दान करते रहें। अनेक संस्थाओं के पास आयकर छूट की सुविधा होती है आप उस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं।

3. अपने मित्रों तथा परिचितों को भी सम्बन्धित संस्था का सदस्य बनायें। इस विधि से संस्था का कार्यक्षेत्र बढ़ता चला जायेगा। अच्छी बातों का प्रचार करने से अच्छाई बढ़ती चली जाती है।

4. कभी–कभी संस्थाओं के कार्यक्रमों में भी सम्मिलित होना चाहिये जिस से आपका परिचय बढेगा और दूसरे लोग भी प्रभावित होंगे। परन्तु केवल नेतागिरी या जय–जयकार सुनने वाला व्यक्ति प्रतिष्ठा का पात्र नहीं बन पाता।

5. युवा वर्ग के पास इतना समय नहीं होता फिर भी वे सप्ताह में 2–3 घण्टे निकाल कर ऐसी सामाजिक संस्थाओं के प्रचार में सहयोग कर सकते हैं। किसी वृद्धाश्रम में जाकर अन्य साथियों को लेकर वृद्धों की ओषधियां, आवश्यक सामान, पुष्प आदि देकर उनका मनोबल बढ़ा सकते हैं। इन कार्यों से वृद्धजनों का आशीर्वाद तथा मन को भी शान्ति मिलेगी।

Makers of the Arya Samaj : Mahatma Hansraj

.......A Sanskrit poet has said, "Before I have crossed the ocean of one grief, another grief baffles me. Surely troubles always come in large numbers." This proved true in the case of L. Hans Raj. While his son was standing his trial his wife fell dangerously ill. She was a very noble lady. She had shared gladly all the hardships of her husband. She was also a public-spirited woman. It was she who had been responsible for spreading the Arya Sama j amongst the women of the Punjab. She had started a girls' school for the education of girls. For these things she had herself collected funds. She was as much devoted to her home as to the cause of the Arya Samaj. .....

Continue From Last issue

In this connection a story is told about R. B. L. Lal Chand. He was one of the foremost lawyers in the province and also rose to the Bench. While he was one ofthe judges ofthe Chief Court, Punjab, he acted as the President ofthe D.A.V. College Managing Committee. One day a friend, desiring to see him, was asked to go to the D.A.V. College where he could be found. On reaching the place he found him supervising the work of some carpenters. He was astonished atthis and said, "Aman like you should not attend to such petty work." "My friend," replied L. Lal Chand, ''why not, when the money that is being spent is the money of very poor people?" It is this sense of duty and love of economy which have distinguished the workers of this college.

After retiring from the college, L. Hans Raj was elected President of the D .A. V.College Managing Commit- tee. His own idea was to devote himself to the work oftheArya Samaj, but he had to accept this' office on account of the death ofL. Lal Chand. At that time no one else was thought to be equal to this responsibility. He continued to work in this capacity till 1918. Then he refused to hold this office and made room for a younger man. While in office he fully upheld its traditions. He saw to it that the work expanded. He also saw to it that no money was wasted.

He attended the office every day for three hours. He looked into every detail ofthe management himself. He granted interviews to the heads ofthe various departments ofthe college, and discussed things with them in person. He also established a College of Indian Medicine. Another thing he did was to get a number of religious readers prepared. These were suitable for the different classes in the Arya schools and colleges-. It was through these that religious instruction was to be imparted in future.

His life, however, was not without its troubles. During these years he had to face two great trials, and it is encouraging to relate that he came out successful from both. After wards he stood higher in the estimation of the people than he had ever done before. Everybody admired him for his calmness, his courage and his serenity. There were some who thought that he was another Harish Chandra. As Harish Chandra had faced trials successfully and manfully, so had he.

The first of these trials came when his son, Bal Raj, was arrested on a charge of sedition. He was reading in the M.A. class when he was involved in the Delhi Consp- iracy Case. People at once came forward with offers of help of every kind. But L. Hans Raj refused all such offers. His elder brother, L. Mulk Raj, now a prosperous banker, said that he would be responsible for all the expenses. He nobly fulfilled this promise as he had done before, though the expenses amounted to much. It is said that L. Mulk Raj had to sell off a house or two in order to meet them.

At first the young man was sentenced to transportation for life. An appeal was filed in the High Court. Then the sentence was reduced to seven years' imprisonment. After serving out his sentence Bal Raj came out and set up as a businessman.

A Sanskrit poet has said, "Before I have crossed the ocean of one grief, another grief baffles me. Surely troubles always come in large numbers." This proved true in the case of L. Hans Raj. While his son was standing his trial his wife fell dangerously ill. She was a very noble lady. She had shared gladly all the hardships of her husband. She was also a public-spirited woman. It was she who had been responsible for spreading the Arya Sama j amongst the women of the Punjab. She had started a girls' school for the education of girls. For these things she had herself collected funds. She was as much devoted to her home as to the cause of the Arya Samaj.

To be continued......

With thanks By: "Makers of Arya Samaj"

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के तत्वावधान में राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय तार्किक ज्ञान विज्ञान वर्धनी परीक्षा प्रतियोगिता

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के तत्त्वावधान में राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय तार्किक ज्ञान विज्ञान वर्धनी परीक्षा प्रतियोगिता का ऑनलाइन आयोजन 12 अगस्त से 20 सितंबर तक स्वामी विवेकानंद परिव्राजक के मार्गदर्शन में संपन्न हुई जिसमें 3000 के लगभग परीक्षार्थियों ने भाग लिया।

प्रतिभागियों से राष्ट्र, समाज, मानवोत्थान से संबंधित गहन तर्क वितर्क कर, अनेक रूढ़िवादी सोच व शंकाओं का सप्रमाण वैज्ञानिक समाधान करने के लिए प्रिं सुमन आर्य, डॉ मनीष आर्य तथा परसाराम मुनि जी ने, आचार्य मुमुक्षु जी का विशेष सहयोग किया, जो कि 5 स्तरीय कड़ी परीक्षा से

गुजरने उपरांत ही संपन्न हुई। राष्ट्रीय स्तरीय शिरोमणि पुरुष वर्ग– श्री कृष्णपद ढाली (तेलंगाना), महिला वर्ग– श्रीमती अंजू राजबीर (हरियाणा) विद्यार्थी वर्ग कुमारी श्रेया रेल, (गुरुग्राम) कुमार मनु देव आर्य, हरियाणा चयनित किए गए। अन्य राज्यों से चयनित शिरोमणि के अलावा विद्यार्थी वर्ग कुमारी मुस्कान चौधरी, नूरपुर (गंगथ) शिरोमणि कु विशाल भूषण, चंबा उप शिरोमणि, पुरुष वर्ग– डॉ मनोज ठाकुर, पपरोला व महिला वर्ग– डॉ आकांक्षा डोगरा, पपरोला शिरोमणि हिमाचल प्रदेश से चयनित किए गए। अध्यापक पुरुष वर्ग– श्री विक्रमादित्य महाजन चंबा तथा महिला वर्ग– श्रीमती पूनम गुप्ता नेरचौक व श्रीमती मीरा शर्मा, कंडाघाट संयुक्त शिरोमणि चयनित हुए। प्रतियोगिता के माध्यम से 70 प्रतिभागियों को उत्कृष्ट सम्मान व प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे। सभा प्रधान श्री प्रबोध चंद्र सूद, व.उप प्रधान श्री योग प्रकाश नंदा तथा महामंत्री श्री विपन महाजन आर्य ने इस सारे आयोजन में अधिक से अधिक लोगों को जोड़कर प्रतियोगिता सफलतापूर्वक संपन्न करवाई, जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा एवं संस्कृति परिषद दिल्ली ने सहयोगी की भूमिका बखूबी अदा की। ***– विपिन महाजन आर्य, महामंत्री, आ.प्र.सभा हि.प्र.***

प्रथम पृष्ठ का शेष

कार्यक्रम में पधारे वाल्मीकि समाज के वरिष्ठ समाज सेवी, प्रधान दुनी सिंह सहित, सफाई अधिकारियों, कर्मियों, तथा मशाल कार्यकर्त्ताओं को पुरस्कृत किया गया। सेवा सम्मान कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्यसमाज के प्रधान सुभाष कोहली, मंत्री अश्विनी आर्य एवं कोषाध्यक्ष बृहस्पति आर्य, का योगदान रहा। इस अवसर पर कोरोना मुक्ति के लिए विशेष यज्ञ का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम में 'मशाल टीम' ने नशाबन्दी आन्दोलन पर डाक्यूमैंट्री फिल्म दिखा कर सबको जागरूक किया। अग्नि भारद्वाज ने मशाल की 4 वर्षों की गतिविधियों पर प्रकाश डाला और कार्यक्रम का संचालन श्री बलराम शर्मा जी ने किया। अन्त में ऋषि लंगर का सुंदर आयोजन भी हुआ। ***– विकास चतुर्वेदी, संयोजक, मशाल***

वैदिक साहित्य विक्रेताओं के लिए विशेष सूचना

ऐसे समस्त महानुभाव जो आर्यसमाज के विभिन्न कार्यक्रमों/वार्षिकोत्सवों में जा–जाकर साहित्य विक्रय का कार्य करते हैं तथा आर्यसमाज के अतिरिक्त अन्य साहित्य नहीं बेचते। अर्थात् जिनकी आजीविका कवेल आर्यसमाज के साहित्य को विभिन्न स्थानों पर होने वाले आयोजनों में जाकर बेचने पर ही निर्भर है, उनके लिए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा विशेष व्यवस्थाएं बनाने का प्रयास कर रही है।

अत: ऐसे समस्त वैदिक साहित्य विक्रेताओं से निवेदन है कि वे योजना का लाभ उठाने के लिए अपना पंजीकरण कराएं। पंजीकरण कराने के लिए एक प्लेन कागज पर आवेदन पत्र के साथ अपना नाम, पता, मोबाईल नं. तथा इस कार्य में आने वाली समस्याओं और उन्हें दूर करने के उपाय/सुझाव लिखकर **"महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001"** के पते पर लिखकर भेजें।

– महामन्त्री

पृष्ठ 4 का शेष

अति की भली न बोलना,
अति की भली न चुप।
अति की भली न बरसना,
अति की भली न धूप।।

अर्थात् जैसे ज्यादा बोलना भी अच्छा नहीं होता और अधिक मौन रहना भी अनुचित है। ज्यादा वृष्टि भी अच्छी नहीं होती और अधिक धूप भी हानिकारक है। इसलिए टी.वी. को जी का जंजाल मत बनाओ। सप्ताह में एक दिन या दिन में कोई समय निश्चित कीजिए। जिससे आपको समय की हानि न हो और उचित लाभ प्राप्त हो सके। जब आप समय का सदुपयोग करेंगे, तब आपको स्वयं प्रसन्नता होगी।

प्रसन्नता परमात्मा का प्रसाद है। विद्यार्थी को अपने जीवन में प्रसन्नता अपनानी चाहिए। चेहरे पर ताजगी हो, मुख पर मुस्कान हो और हिम्मत के भाव हों, कुछ कर दिखाने की चाहत उसके अन्दर से झलकनी चाहिए। समय कैसा भी हो विपरीत हो या अनुकूल हो, हौंसले

समय का सदुपयोग

के साथ आगे बढ़ना चाहिए। निराशा को कभी अपने पास मत आने देना, मूड खराब मत करना और निरन्तर परिश्रम और पुरुषार्थ के बल पर उन्नति के मार्ग पर अवरोधों को पार करते हुए आगे बढ़ते रहना ही सफलता की निशानी है। अगर विद्यार्थी किसी कारण से अथवा अपने आलस्य, प्रमाद से, समय के दुरुपयोग से असफल हो भी जाता है तो उसे निराश नहीं होना चाहिए। ये विषाद की स्थिति नहीं होती बल्कि जागने का संकेत होता है। समय की कीमत को पहचानने का सुनहरा अवसर होता है।

शोक समाचार

श्री सत्यव्रत सामवेदी जी का निधन

राजस्थान के वरिष्ठ आर्य नेता, विभिन्न संस्थाओं के संगठक, गीता व वेदों के मर्मज्ञ, ओजस्वी वक्ता, श्री सत्यव्रत सामवेदी जी का 10 अक्तूबर को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार11 अक्तूबर को प्रात: 10 बजे आदर्श नगर शमशान घाट, जयपुर (राज.) में किया गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 13/10/20 को जयपुर में सम्पन्न हुई।

श्री राय साहब जी का निधन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के विधि विभाग में कार्यरत् श्री हरिश सिंह जी के पूज्य दादा जी श्री राय साहब सिंह जी का दिनांक 4 अक्तूबर, 2020 को 91 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 5 अक्तूबर को पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 17 अक्तूबर, 2020 को उनके पैत्रक गांव में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

गुरुकुल कांगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार
(नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त एवं यू.जी.सी. एक्ट 1956 के सेक्शन-3 के अन्तर्गत समविश्वविद्यालय)

रिक्तियाँ

विज्ञापन सं. गु.का.वि./स्था.-II/01/2020 दिनांक 10.10.2020

अर्ह अभ्यर्थियों से प्रशासनिक (कुलसचिव एवं वित्ताधिकारी)/गैर प्रशासनिक (पुस्तकालयाध्यक्ष) पदों पर नियुक्तियों हेतु निर्धारित प्रारूप में आवेदन पत्र आमंत्रित किये जाते हैं। आवेदन पत्र आवेदन शुल्क रू0 550/-(रू0 150/-अनु.जाति/अनु. जनजाति/दिव्यांग वर्ग के लिए) के साथ जमा होंगे। पदो का विवरण/न्यूनतम अर्हता/शैक्षिक योग्यताएं/पे लेवल/आरक्षण/सामान्य शर्ते एवं सूचनाएं आवेदन प्रारूप इत्यादि की विस्तृत जानकारी वेबसाइट **www.gkv.ac.in** पर उपलब्ध है।

आवेदन पत्र जमा करने की अंतिम तिथि 11.11.2020 हैं। कुलसचिव

GURUKULA KANGRI (DEEMED TO BE UNIVERSITY), HARIDWAR
(NAAC 'A' Grade Accredited Deemed to be University U/S 3 of UGC act. 1956)

VACANCIES

Adv. No. GKV/Estt.-II/01/2020 **Dated 10.10.2020**

Applications are invited in the prescribed proforma from eligible candidates for appointment to the position of Administrative posts (Registrar/Finance Officer)/Non Administrative (Librarian). Application form is to be submitted along with application fee of Rs. 550/- (Rs. 150- for SC/ST/PWD). The details of the posts/minimum eligibility/educational qualifications/pay levels/reservation/general conditions & information, application form etc. are available on the website **www.gkv.ac.in**

The Last date for receipt of application is 11.11.2020 Registrar

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

सोमवार 12 अक्तूबर, 2020 से रविवार 18 अक्तूबर, 2020
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 15-16 अक्तूबर, 2020
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 14 अक्तूबर, 2020

आर्य संदेश टीवी चैनल
www.AryaSandeshTV.com

प्रसारित होने वाले दैनिक कार्यक्रम

प्रात: 5:00 जागरण मन्त्र
प्रात: 5:05 शरण प्रभु की आओ रे
प्रात: 6:00 योग एवं स्वास्थ्य
प्रात: 6:30 संध्या
प्रात: 6:45 आओ ध्यान करें
प्रात: 7:00 दैनिक अग्निहोत्र
प्रात: 7:30 वैदिक विद्वानों के सानिध्य में व्याख्यानमाला (लाइव)
प्रात: 8:30 भजन बेला
प्रात: 9:00 श्री राम कथा
प्रात: 9:30 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव
प्रात: 10:00 प्रवचन संग्रह
प्रात: 10:30 नव तरंग
प्रात: 11:00 प्रवचन माला
प्रात: 11:30 योग एवं स्वास्थ्य
अपरान्ह 12:00 श्री राम कथा
अपरान्ह 12:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
अपरान्ह 1:00 विशेष
अपरान्ह 2:00 आर्य मंच
अपरान्ह 2:30 भजन सरिता
अपरान्ह 3:00 प्रवचन माला
अपरान्ह 3:30 नव तरंग
सायं 4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव
सायं 5:00 योग एवं स्वास्थ्य
सायं 5:30 शरण प्रभु की आओ रे
सायं 6:00 सायंकालीन अग्निहोत्र
सायं 6:30 संध्या
सायं 6:45 आओ ध्यान करें
सायं 7:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
सायं 7:30 श्री राम कथा
सायं 8:00 भजन सरिता
सायं 8:30 भजन बेला
रात्रि 9:00 वैदिक विद्वानों के सानिध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 10:00 शयन मन्त्र
रात्रि 10:05 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव
रात्रि 11:00 नव तरंग
रात्रि 11:30 प्रवचन माला
रात्रि 12:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
रात्रि 12:30 शरण प्रभु की आओ रे
रात्रि 1:00 विशेष
रात्रि 2:00 वैदिक विद्वानों के सानिध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 3:00 आर्य मंच
रात्रि 3:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
प्रात:4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव

नोट : आपातकालीन स्थिति में उपरोक्त दैनिक कार्यक्रमों में परिवर्तन किए जा सकते हैं। *- व्यवस्थापक*

आप भी बनें यज्ञमित्र

कम से कम 12 नए परिवारों में यज्ञ कराएं
दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र एन.सी.आर. में यज्ञमित्र बनने के लिए सम्पर्क करें-
श्री सतीश चड्ढा जी
महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली
मो. 954004141, 9313013123

प्रतिष्ठा में,

युवा भजनोपदेशकों की सेवा का लाभ उठाएं

आप सबको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि अब दिल्ली में दो युवा भजनोपदेशक श्री सन्दीप भास्कर एवं श्री कुलदीप आर्य जी निवास कर रह हैं। दिल्ली एवं दिल्ली एन.सी.आर. की समस्त आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं, शिक्षण संस्थानों के माननीय अधिकारी महानुभावों से निवेदन है कि अपने प्रचार कार्यक्रमों - वार्षिकोत्सवों, वेद प्रचार सप्ताहों, भजन संध्या, देशक्ति गीत माला तथा अन्य उत्सवों/कार्यक्रमों में इन्हें आमन्त्रित करें और इनके ईश्वर भक्ति भजनों, महर्षि दयानन्द एवं आर्यसमाज गुणगान, देश भक्ति गीतों, कवित्त एवं दोहों का आनन्द लें।

भजनोपदेशक महानुभावों को आमन्त्रित करने के लिए नीचे दिए गए उनके मोबाइल नं. पर अथवा 7428894029 से सम्पर्क करें -

श्री सन्दीप भास्कर जी मो. 9311413918
श्री कुलदीप आर्य जी मो. 9311414596

- महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह